

पिंग की कहानी
मार्जोरी फ्लैक और कूर्त वीज़



THE STORY OF PING

By Marjorie Flack and Kurt Wiese



नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति
ने 'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया
है। इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket, New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS NOV 2007 2K 2000 NJVA 0104/2007

पिंग की कहानी The Story of Ping

मार्जोरी फ्लैक और कुर्ट वीज़ Marjorie Flack and Kurt Wiese

हिंदी अनुवाद Hindi Translation

अंशुमाला गुप्ता Anshumala Gupta

कॉपी संपादक Copy Editor

राधेश्याम मंगोलपुरी Radheshyam Mangolpuri

ग्राफिक्स Graphics

अभय कुमार झा Abhay Kumar Jha

कवर Cover

गॉडफ्रे दास Godfrey Das

प्रथम संस्करण First Edition

नवंबर 2007 November 2007

सहयोग राशि Contributory Price

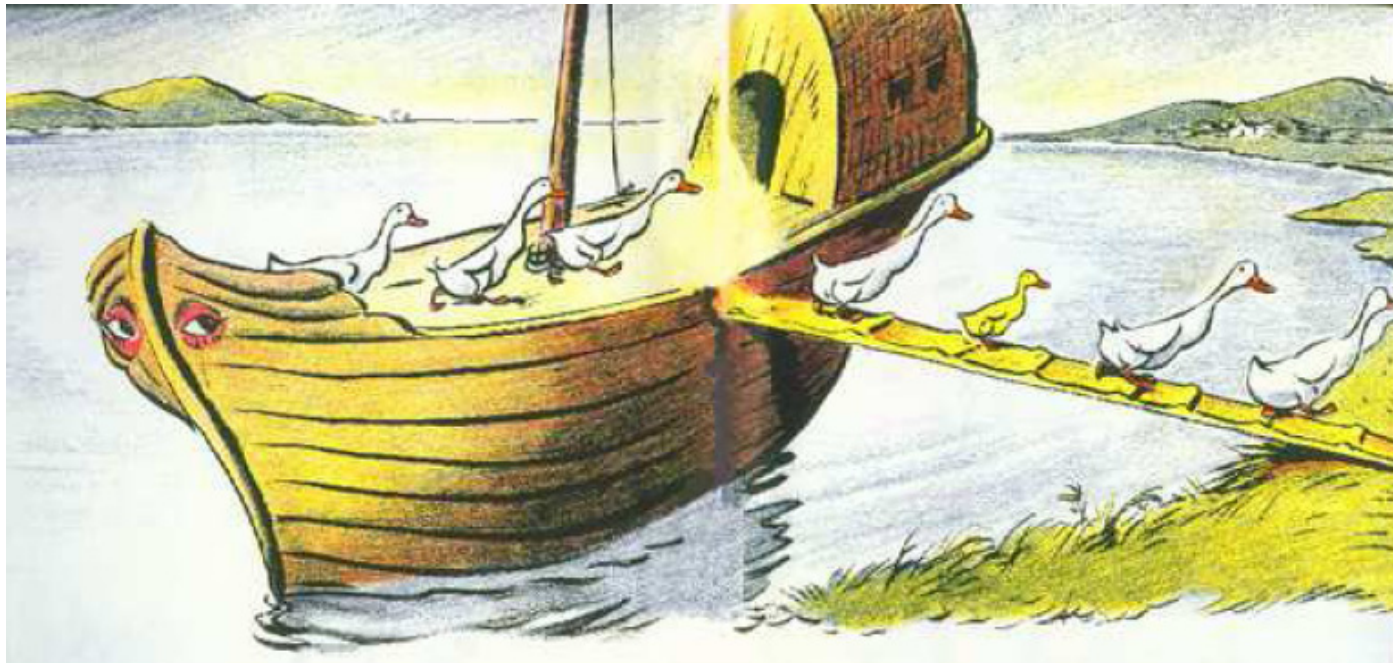
20 रुपये Rs. 20.00

मुद्रण Printing

सन शाइन ऑफसेट Sun Shine Offset

नई दिल्ली - 110 018 New Delhi - 110 018

पिगा
का
कहानी



एक बार की बात है— पिंग नाम का एक खूबसूरत छोटा बत्तख था। वह अपनी मां, अपने पिता, अपनी दो बहनों, अपने तीन भाइयों, ग्यारह चाचियों, सात चाचाओं और बयालीस चचेरे भाई-बहनों के साथ रहता था।

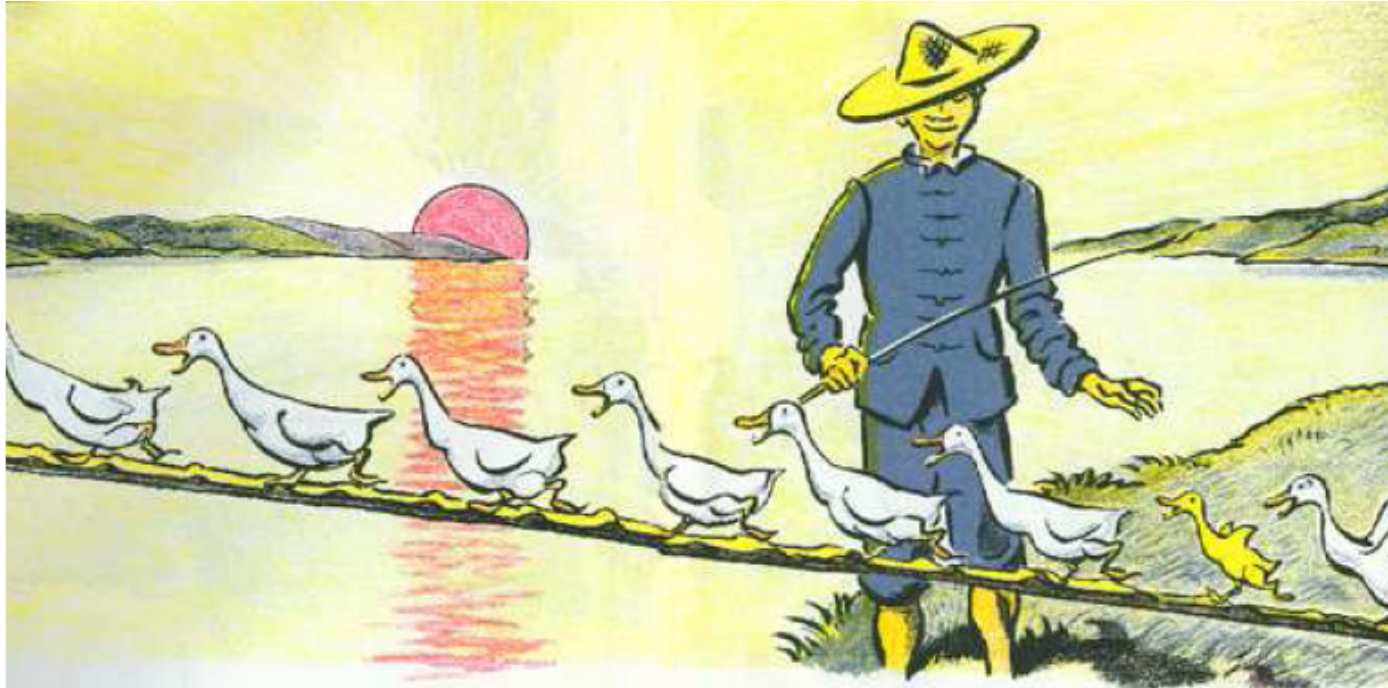
उनका घर था यांगजी नदी पर समझदार आंखों वाली एक नाव।

हर सुबह जब सूरज पूरब में निकलता पिंग, उसकी मां और पिता, दो बहनें और तीन भाई, ग्यारह चाचियां और सात चाचा और बयालीस चचेरे भाई-बहन, सब एक-एक करके, एक छोटे-से पुल पर कदम बढ़ाते हुए यांगजी नदी के किनारे जाते।

Once upon a time there was a beautiful young duck named Ping. Ping lived with his mother and his father and two sisters and three brothers and eleven aunts and seven uncles and forty-two cousins.

Their home was a boat with two wise eyes on the Yangtze River.

Each morning as the sun rose from the east, Ping and his mother and his father and two sisters and three brothers and eleven aunts and seven uncles and forty-two cousins all marched one by one, down a little bridge to the shore of the Yangtze River.



सारा दिन वे घोंघे, मछलियां और खाने की दूसरी मजेदार चीजें ढूंढते। लेकिन शाम होते ही जब सूरज पश्चिम में डूबने लगता, नाव का मालिक जोर से हांक लगाता— “ला-ला-ला-ला-लेई!”

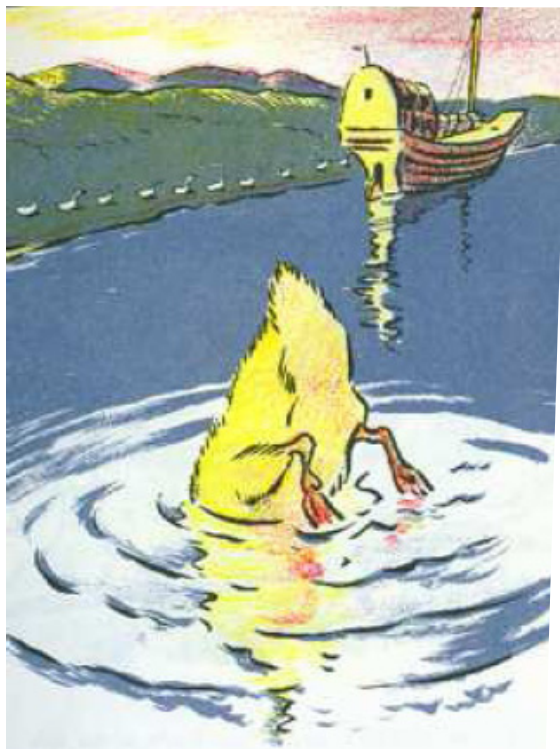
तुरंत ही पिंग और उसका सारा परिवार जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए दौड़कर आते और एक-एक करके उस छोटे पुल पर चढ़कर समझदार आंखों वाली उस नाव पर पहुंच जाते, जो यांगजी नदी पर उनका घर था।

पिंग हमेशा ध्यान रखता, बहुत-बहुत ध्यान रखता कि वह आखिर में न पहुंचे, क्योंकि जो भी बत्तख पुल को आखिर में पार करता था, उसकी पीठ पर एक तमाचा पड़ता था।

All day they would hunt for snails and little fishes and other pleasant things to eat. But in the evening as the sun set in the west, "La-la-la-la-lei!" would call the Master of the boat.

Quickly Ping and all his many family would come scurrying, quickly they would march, one by one, up over the little bridge and on to the wise-eyed boat which was their home on the Yang-tze River.

Ping was always careful, very-very careful not to be the last, because the last duck to cross the bridge always got a spank on the back.



लेकिन एक दिन शाम को जब छायाएं लम्बी होने लगीं, पिंग ने आवाज नहीं सुनी, क्योंकि उस समय वह एक छोटी मछली पकड़ने की कोशिश में लगा था और उसका गलत हिस्सा पानी के ऊपर था।

जब पिंग का सही हिस्सा पानी के ऊपर आया, उसकी मां, उसके पिता और उसकी चाचियां पहले ही एक-एक करके पुल के ऊपर चल पड़े थे। जब पिंग तट के पास पहुंचा, उसके चाचा

But one afternoon as the shadows grew long, Ping did not hear the call because at that moment Ping was wrong side up trying to catch a little fish.

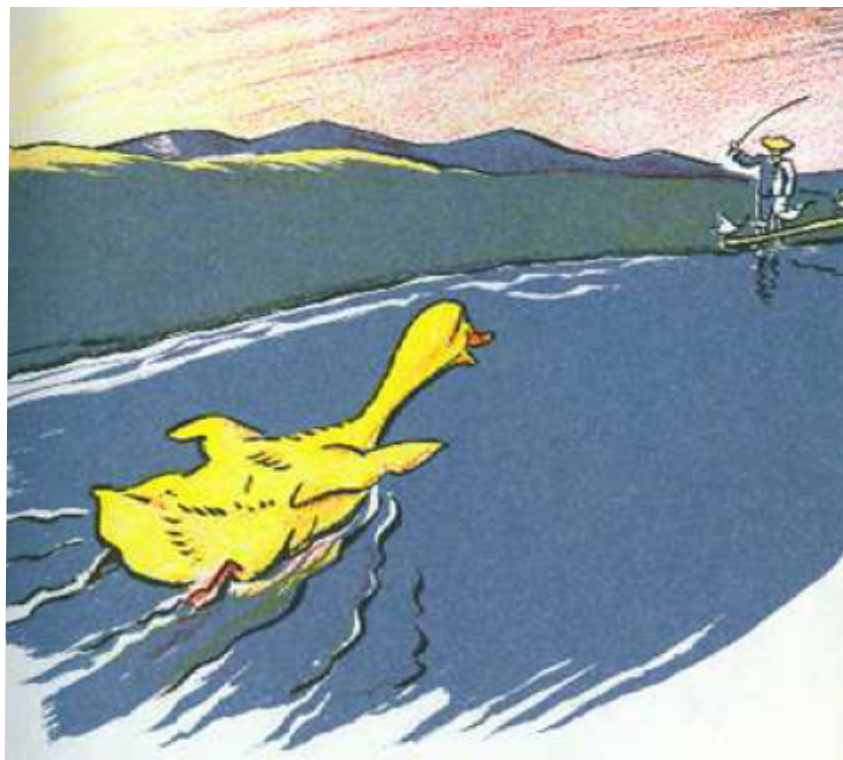
By the time Ping was right side up his mother and his father and his aunts were already marching, one by one, up over the bridge. By the time Ping neared the shore, his uncles and his cousins were marching over,

और चचेरे बहन-भाई आगे बढ़ रहे थे। जब तक वह तट पर पहुंच पाया, उसके बयालीस भाई-बहनों में से आखिरी बत्तख भी पुल पार कर चुका था।

पिंग को पता था कि अगर उसने पुल पार किया तो वह आखिरी, बिल्कुल आखिरी, बत्तख होगा। वह तमाचा खाना नहीं चाहता था।

and by the time Ping reached the shore the last of his forty-two cousins had crossed the bridge.

Ping knew he would be the last, the very last duck if he crossed the bridge. Ping did not want to be spanked.





तो वह छिप गया।

पिंग घास के पीछे छिप गया। जैसे-जैसे अंधेरा छाता गया और आसमान में पीला चांद चमकने लगा, पिंग ने समझदार आंखों वाली नाव को यांगजी नदी में धीरे-धीरे तैरकर जाते देखा।

So he hid.

Ping hid behind the grasses, and as the dark came and the pale moon shone in the sky Ping watched the wise-eyed boat slowly sail down the Yangtze River.

सारी रात पिंग नदी के किनारे घासों के बीच अपने पंख में सिर छुपाए सोता रहा और जब सूरज पूरब में निकल आया, तो उसने पाया कि वह यांगजी नदी पर बिल्कुल अकेला है।

All night long Ping slept near the grasses on the bank of the river with his head tucked under his wing, and when the sun rose up from the east Ping found he was all alone on the Yangtze River.





वहां पिता या मां नहीं थे, बहन या भाई नहीं थे, चाची और चाचा नहीं थे, बयालीस चचेरे भाई-बहन नहीं थे—इनमें से कोई भी वहां नहीं था, जो पिंग के साथ मछली पकड़ने जाता। तो यांगजी नदी के पीले पानी पर तैरता हुआ पिंग उन्हें ढूँढ़ने लगा।

There was no father or mother, no sisters or brothers, no aunts or uncles, and no forty-two cousins to go fishing with Ping, so Ping started to find them, swimming down the yellow waters of the Yangtze River.



जैसे-जैसे सूरज आकाश में ऊपर चढ़ता गया, नावें आने लगीं- बड़ी नावें और छोटी नावें, मछली पकड़ने वाली नावें और भिखारियों की नावें, घर वाली नावें और लट्टों की नावें। इन सभी नावों को पिंग की आंखें देख रही थीं। पर उसे कहीं भी समझदार आंखों वाली वह नाव नजर नहीं आई, जो उसका घर थी।

As the sun rose higher in the sky, boats came. Big boats and little boats, fishing boats and beggar's boats, house boats and raft boats, and all these boats had eyes to see with, but nowhere could Ping see the wise-eyed boat which was his home.



फिर एक नाव आई जो अजीब-से काले मछली पकड़ने वाले पक्षियों से भरी थी। पिंग ने देखा कि वे अपने मालिक के लिए मछली लाने के लिए गोता लगा रहे थे। जैसे ही कोई पक्षी अपने मालिक को एक मछली लाकर देता, उसका मालिक तनखाह के तौर पर मछली का एक छोटा टुकड़ा उसे देता।

Then came a boat full of strange dark-fishing birds. Ping saw them diving for fish for their Master. As each bird brought a fish to his Master he would give it a little piece of fish for pay.



मछली पकड़ने वाले पक्षी उड़कर पिंग के और नजदीक आए। अब पिंग उनकी गर्दनों के चारों ओर चमकते छल्ले देख सकता था। ये धातु के छल्ले इतने कसे हुए थे कि पक्षी कभी भी उन बड़ी मछलियों को निगल नहीं सकते थे जिन्हें वे पकड़ रहे थे।

लपक, छपाक, छपाक, छल्ले वाले पक्षी पिंग के चारों ओर जोर से झपट रहे थे। उसने अंदर गोता लगाया और यांगजी नदी के पीले पानी के नीचे तैरने लगा।

Closer and closer swooped the fishing birds near Ping. Now Ping could see shining rings around their necks, rings of metal made so tight the birds could never swallow the big fish they were catching.

Swoop, splash, splash, the ringed birds were dashing here and there all about Ping, so down he ducked and swam under the yellow water of the Yangtze River.



जब पिंग उन पक्षियों से बहुत दूर पानी के ऊपर निकला तो उसे खाने के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते मिले। ये चावल की केक के टुकड़े थे, जो एक घरवाली नाव तक रास्ता बनाए हुए थे।

When Ping came up to the top of the water far away from the fishing birds, he found little crumbs floating, tender little rice cake crumbs which made a path to a house boat.

जैसे-जैसे पिंग इन टुकड़ों को खाता गया,
वह घर वाली नाव के नजदीक, और नजदीक
आता गया, और ""

As Ping ate these crumbs, he came
nearer and nearer to the house boat,
then —





छपाक!

पानी के अंदर एक लड़का था— एक छोटा लड़का। उसकी पीठ पर एक पीपा था, जो नाव के साथ रस्सी से उसी प्रकार बंधा था, जिस तरह यांगजी नदी के सभी नाव वाले लड़के अपनी नावों से बंधे होते थे। उस लड़के के हाथ में एक चावल का केक था।

SPLASH!

There in the water was a Boy! A little boy with a barrel on his back which was tied to a rope from the boat just as all boat boys on the Yangtze River are tied to their boats. In the Boy's hand was a rice cake.

“ओह - ओ ओ ओ ओ उ उ उ !”
वह छोटा लड़का चिल्लाया और पिंग झपटा
और उसने चावल का केक छीन लिया।

“Oh-owwwwooooo!” cried the lit-
tle Boy, and up dashed Ping and
snatched at the rice cake.





तुरंत ही लड़के ने पिंग को पकड़कर हाथों में जकड़ लिया।

“कै - कै - कै - कै!” पिंग चिल्लाने लगा।

“ओह! - ओ ओ ह - उ उ!” छोटा लड़का चिल्लाया।

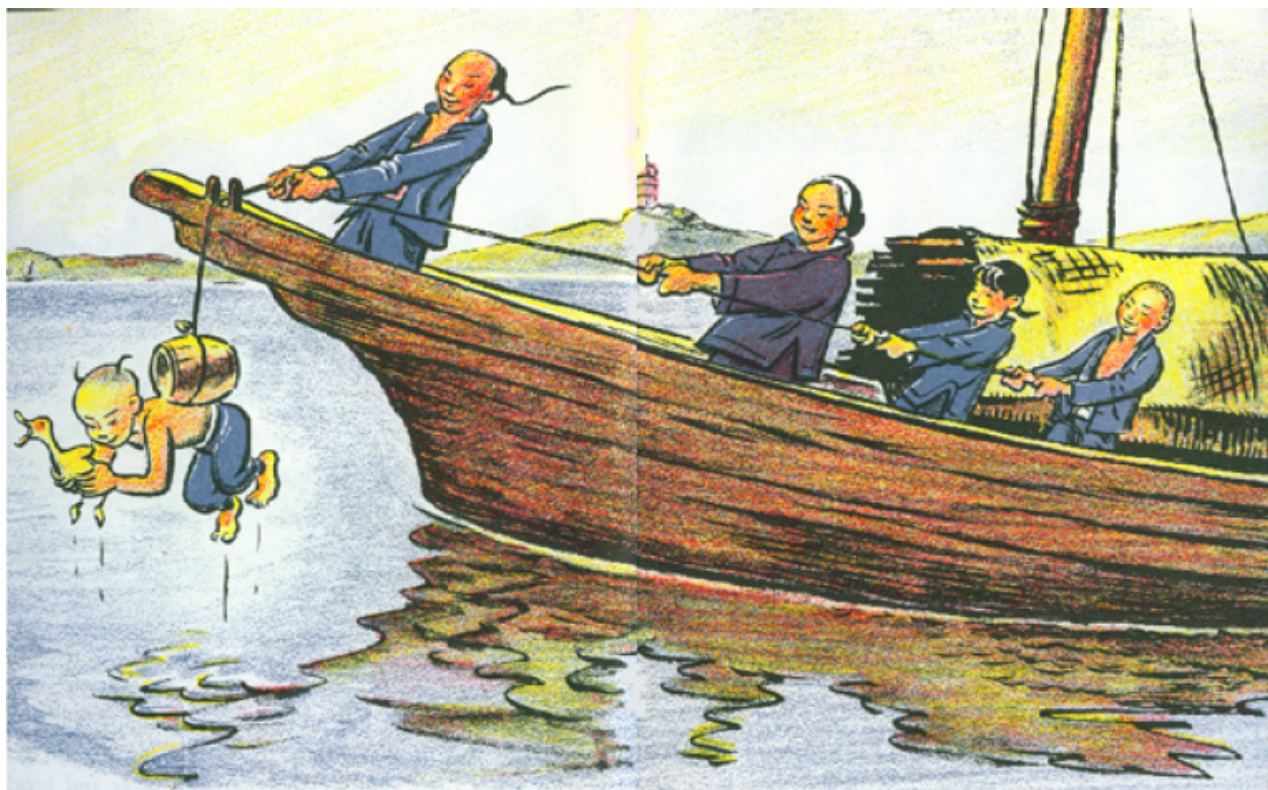
पिंग और लड़के ने इतना पानी उछाला और इतना शोर मचाया कि लड़के का बाप दौड़ता हुआ आया और लड़के की मां भी दौड़ती हुई आई। लड़के की बहन और भाई दौड़ते आए। उन सबने नाव के किनारे से झांककर पिंग और लड़के को यांगजी नदी के पानी में हाथ - पैर मारते देखा।

Quickly the Boy grabbed Ping and held him tight.

“Quack - quack - quack - quack!” cried Ping.

“OH! - Ohh-ooo!” yelled the little Boy.

Ping and the Boy made such a splashing and such a noise that the Boy's father came running and the Boy's mother came running and the Boy's sister and brother came running and they all looked over the edge of the boat at Ping and the Boy splashing in the water of the Yangtze River.



फिर लड़के के पिता और माता ने वह रस्सी खींची जो लड़के के पीठ पर बंधे पीपे से जुड़ी थी।

उन्होंने खींचा और पिंग तथा लड़का दोनों घर वाली नाव के ऊपर आ गए।

Then the Boy's father and the mother pulled at the rope which was tied to the barrel on the little Boy's back.

They pulled and they pulled and up came Ping and the Boy on to the house boat.



28

“आह, एक बत्तख का भोजन हमारे पास आ गया!” लड़के के पिता ने कहा।

“Ah, a duck dinner has come to us!” said the Boy's father.

“आज रात सूरज ढलने पर मैं
इसे चावल के साथ पकाऊंगी,”
लड़के की मां ने कहा।

“नहीं-नहीं! मेरी प्यारी बत्तख
इतनी सुंदर है कि उसे खाया नहीं
जा सकता,” लड़का चिल्लाया।

“I will cook him with rice at
sunset tonight,” said the Boy's
mother.

“NO-NO! My nice duck is
too beautiful to eat,” cried
the Boy.





30

लेकिन पिंग के ऊपर एक टोकरी डाल दी गई और अब वह न लड़के को देख सकता था, न नाव को, न आकाश को और न ही यांगजी नदी के सुन्दर पीले पानी को।

सारे दिन पिंग सूरज की उन पतली रेखाओं को ही देख सकता था जो टोकरी के छेदों से चमक रही थीं, और पिंग बहुत उदास था।

But down came a basket all over Ping and he could see no more of the Boy or the boat or the sky or the beautiful yellow water of the Yang-tze River.

All day long Ping could see only the thin lines of sun which shone through the cracks in the basket, and Ping was very sad.

काफी देर के बाद पिंग ने चप्पुओं की आवाजें सुनीं और नाव की धच्च-धच्च महसूस की, जब उसे खे कर यांगजी नदी में ले जाया जा रहा था।

जल्दी ही टोकरी के छेदों से आ रही धूप की लकीरों का रंग गुलाबी हो गया और इससे पिंग को पता चल गया कि सूरज पश्चिम में डूब रहा है। पिंग ने अपने नजदीक आते पैरों की आवाज सुनी।

After a long while Ping heard the sound of oars and felt the jerk, jerk, jerk of the boat as it was rowed down the Yangtze River.

Soon the lines of sunshine which came through the cracks of the basket turned rose color, and Ping knew the sun was setting in the west. Ping heard footsteps coming near to him.





32

जल्दी से टोकरी को हटाया गया और अब
छोटे लड़के के हाथ पिंग को पकड़े हुए थे।

The basket was quickly lifted, and
the little Boy's hands were holding
Ping.

जल्दी से चुपचाप लड़के ने पिंग को नाव के किनारे से गिरा दिया, और पिंग पानी में उतर गया – यांगजी नदी के खूबसूरत पानी में।

तभी पिंग ने अपनी पुकार सुनी,
“ला-ला-ला-ला-लेई।”

Quickly, quietly, the Boy dropped Ping over the side of the boat and Ping slipped into the water, the beautiful water of the Yangtze River.

Then Ping heard his call,
“La-la-la-la-lei!”



पिंग ने नजर दौड़ाई। नदी के तट के पास उधर समझदार आंखों वाली वह नाव थी जो पिंग का घर थी। पिंग ने अपनी मां और अपने पिता और अपनी चाचियों को देखा, सब के सब कदम बढ़ाकर एक-एक करके छोटे पुल के ऊपर जा रहे थे।

जल्दी से पिंग मुड़ा और तैरने लगा और तट की ओर बढ़ने के लिए पैर मारने लगा। अब पिंग को अपने चाचा एक-एक करके कदम बढ़ाते हुए दिख रहे थे।

जल्दी-जल्दी पैर मारकर पिंग तट की ओर बढ़ा। उसने अपने चचेरे भाई-बहनों को एक-एक करके कदम बढ़ाते देखा।

जल्दी-जल्दी पिंग पैर मारकर तट के नजदीक पहुंचा, लेकिन-



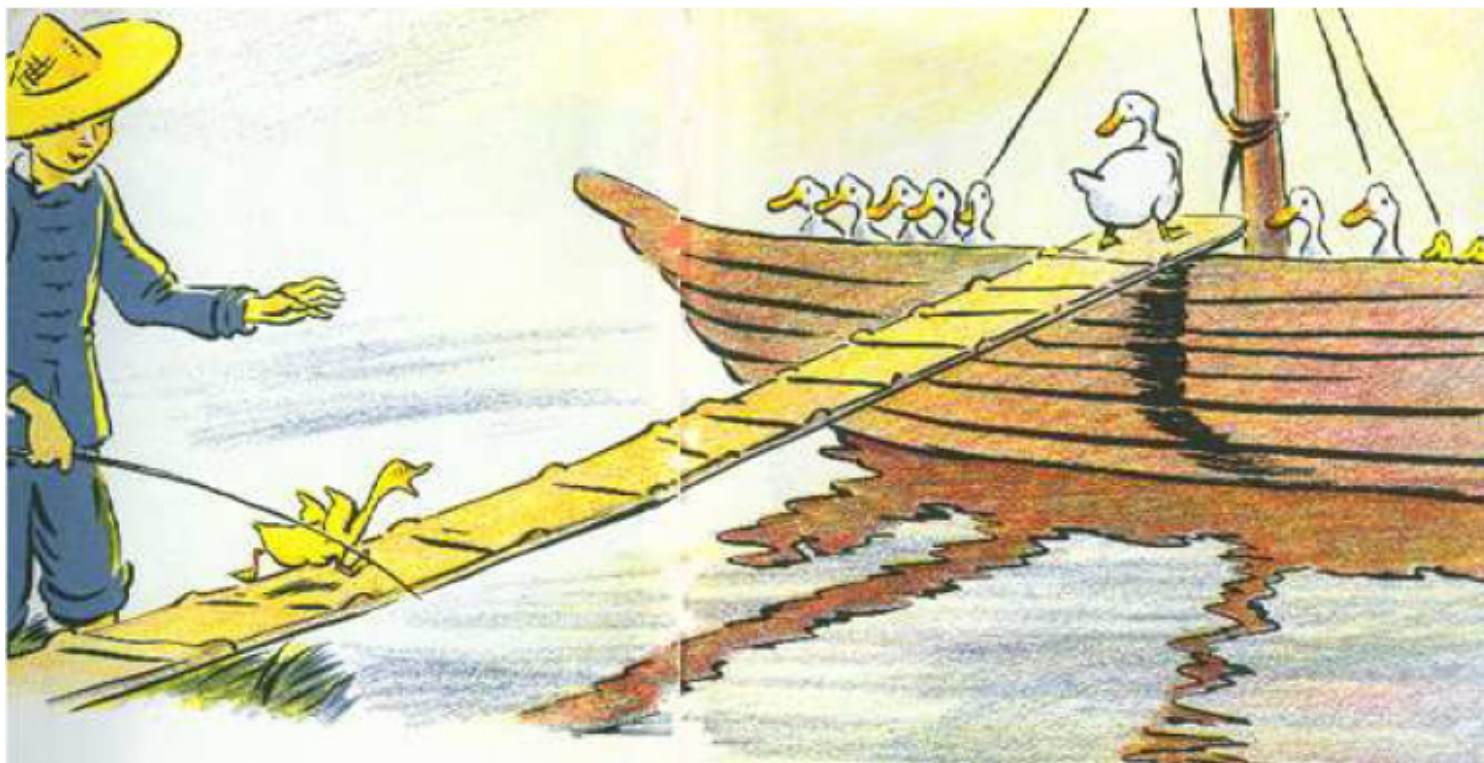


Ping looked and there near the bank of the river was the wise-eyed boat which was Ping's home, and Ping was his mother and his father and his aunts, all marching, one by one, up over the little bridge.

Swiftly Ping turned and swam, paddling toward the shore. Now Ping could see his uncles marching, one by one.

Paddle, paddle, Ping hurried toward the shore. Ping saw his cousins, marching one by one.

Paddle, paddle, Ping neared the shore, but -



जब पिंग तट पर पहुंचा उसके बयालीस चचेरे
भाई-बहनों में से आखिरी बत्तख भी पुल के ऊपर पहुंच
चुकी थी। पिंग समझ गया कि उसे फिर से देर हो गई है।
लेकिन वह फिर भी पुल के ऊपर चलता गया।
'चटाक' पिंग की पीठ पर तमाचा पड़ा।

As Ping reached the shore the last of Ping's
forty two cousins marched over the bridge and
Ping knew that he was LATE again!

But up marched Ping, up over the little
bridge and SPANK came the spank on Ping's
back!



आखिरकार पिंग अपनी मां और अपने पिता, अपनी दो बहनों और तीन भाइयों, ग्यारह चाचियों और सात चाचाओं और बयालीस चचेरे भाई-बहनों के पास पहुंच गया – फिर से अपने घर में, यांगजी नदी के ऊपर समझदार आंखों वाली नाव में।

Then at last Ping was back with his mother and his father and two sisters and three brothers and eleven aunts and seven uncles and forty-two cousins. Home again on the wise-eyed boat on the Yangtze River.

